क्षेत्रीय मार्गदर्शिका

THE MENTORING PROJECT

कलीसिया में आपका जीवन

GRANT CASTLEBERRY

कलीसिया में आपका जीवन

GRANT CASTLEBERRY

(ग्रांट कैसलबेरी)

विषय-वस्तु

परिचय.. 4

भाग I: देह का सिद्धान्त 5

भाग II: देह में शिष्यत्व 21

परिशिष्ट: किस प्रकार की कलीसिया? 28

परिचय

क्या होगा यदि मैं आपको बताऊँ कि आपकी आत्मिक उन्नति के पीछे एक रहस्य था, जिसे अधिकांश आधुनिक मसीही कभी नहीं समझ पाए हैं? क्या होगा यदि मैं आपको बताऊँ कि अनुग्रह में आपकी उन्नति के लिए एक उत्प्रेरक तत्व था, जिसका उपयोग करने में यदि आप विफल हो जाएँ, तो आप अपने मसीही जीवन में पूर्ण परिपक्वता तक पहुँचने से वंचित रह जाएँगे? क्या होगा यदि मैं आपको बताऊँ कि यदि आप इस रहस्य को नहीं जानते, तो आप कभी भी परमेश्वर के पूर्ण ज्ञान तक नहीं पहुँच पाएँगे? मैं सम्भवत: किस बारे में बात कर रहा हूँ? वह रहस्य क्या है?

1
देह का सिद्धान्त

प्रेरित पौलुस हमें स्पष्ट रूप से बताता है कि कलीसिया में आपका जीवन ही वह रहस्य है! मैं इसे "देह का सिद्धान्त" कहता हूँ। यह सिद्धान्त इस प्रकार है कि मसीह ने आदेश दिया कि हमारी उच्चतम आत्मिक उन्नति उसकी देह, अर्थात् कलीसिया में हमारी भागीदारी के माध्यम से होती है। यहाँ पर कोई "अकेले रखवाले" वाला मसीही विश्वास नहीं है। यहाँ पर कोई अलग -थलग रहने वाला आत्मिक दिग्गज नहीं हैं। यहाँ पर कोई गुफाओं में रहने वाले आत्मिक रूप से परिपक्व संन्यासी नहीं हैं। लाल लकड़ी वाले पेड़ एक साथ उगते हैं, जो एक बड़े सिकोइया के जंगल का निर्माण करते हैं। ऐसा ही दिग्गज मसीही विश्वासियों के साथ भी होता है। दिग्गज मसीही विश्वासी अन्य दिग्गजों के साथ समुदाय में उन्नति करते हैं। यह मसीह ने ठहराया है कि कलीसिया ही उसके शिष्यत्व का केन्द्र होगा। वह साथ मिलकर कलीसियाई जीवन के माध्यम से अपने आत्मिक दिग्गजों का निर्माण करता है। इफिसियों 4:13 -14 में पौलुस कहता है कि उस देह का निर्माण मसीह ही करेगा:

> जब तक कि हम सब के सब विश्‌वास और परमेश्‌वर के पुत्र की पहचान में एक न हो जाएँ, और एक सिद्ध मनुष्य न बन जाएँ और मसीह के पूरे डील–डौल तक न बढ़ जाएँ। ताकि हम आगे को बालक न रहें जो मनुष्यों की ठग–विद्या और चतुराई से, उन के भ्रम की युक्‍तियों के और उपदेश के हर एक झोंके से उछाले और इधर–उधर घुमाए जाते हों।

इन आयतों में पौलुस के "सिद्धता" पर जोर देने पर ध्यान दें। वह एक प्रगति के रूप में मसीही जीवन का वर्णन करता है, जिसमें हम लोग मसीह में आत्मिक शिशुओं से "सिद्ध मनुष्य" के रूप में उन्नति करते हैं। सिद्ध के लिए मूल शब्द *टेलिओस (teleios)* है और इसका अर्थ होता "सिद्ध किया हुआ" या "पूरी तरह से विकसित" होने की स्थिति तक पहुँचना है। यह पूरी तरह से विकसित मसीही शिष्यों के रूप में पूर्णता में उन्नति करने का विचार है। 1 कुरिन्थियों 14:20 में पौलुस ने इसी शब्द का उपयोग किया है, जब उसने कहा, "हे भाइयो, तुम समझ में बालक न बनो: बुराई में तो बालक रहो, परन्तु समझ में सियाने बनो।" इफिसियों 4:13 में भी ध्यान दे कि यह प्रक्रिया कैसे घटित होती है। यह "जब तक कि हम सब के सब विश्‌वास और परमेश्‌वर के पुत्र की पहचान में एक न हो जाएँ, और एक सिद्ध मनुष्य न बन जाएँ..." अर्थात् पूरी "देह" एक साथ मसीही विकास की इस प्रक्रिया में शामिल होती है, जब तक कि सिद्धता को "हम सब के सब प्राप्त न कर लें।" यह परमेश्वर की योजना है कि आत्मिक सिद्धता कलीसियाई जीवन के माध्यम से आती है।

या इसे नकारात्मक रूप से कहें तो आप कभी भी अपने उस पूर्ण विकास तक नहीं पहुँच पाएँगे, जिसकी योजना परमेश्वर ने कलीसिया के बाहर आपके जीवन के लिए बनाई है।

मसीही जीवन का बड़ी धारा का किनारा

इस सिद्धान्त को और अधिक पूर्णता से समझाने के लिए, मैं नौसेना के एक नये अधिकारी को प्रशिक्षित करने के विषय पर बात करूँगा, जो ऐसा कुछ है, जिसमें मुझे प्रत्यक्ष अनुभव है। नौसेना के एक नये अधिकारी को प्रशिक्षित करने के लिए, नौसेना दल यूट्यूब का लिंक नहीं भेजता, कि आप अपने जलमार्ग पर चलना सीख सकें। न ही वे आपके लिए दण्ड-बैठक लगाने वाला डण्डा भेजते हैं, ताकि आप अपने लिए दण्ड-बैठकों का अभ्यास कर सकें। न ही वे आपको व्यक्तिगत् रूप से प्रशिक्षित करने के लिए आपके घर पर किसी सेनाधिकारी प्रशिक्षक को भेजेंगे। ऐसा क्यों है? क्योंकि यह एक व्यक्तिगत् अभ्यास नहीं है।

एक नौ-सैनिक अधिकारी बनने के लिए, आपको एक विमान पर चढ़कर, रीगन या डुलेस हवाई अड्डे के लिए उड़ान भरनी होगी, जहाँ से आपको अन्त में दक्षिण में पोटोमैक नदी पर बड़ी धारा का किनारा नामक एक छोटे से नमी वाले प्रशिक्षण केन्द्र पर ले जाया जाएगा। यहीं पर आप नौ-सैनिक दल की अधिकारी प्रत्याशी पाठशाला (OCS - Officer Candidate School) नामक अधिकारी प्रशिक्षण के सौ वर्षों से भी अधिक पुराने नौ-सैनिक दल की परम्परा का गहन अध्ययन करते हैं। एक बार वहाँ पहुँचने पर, आपका सिर मुण्डवा दिया जाएगा। आपको हर सुबह चार बजे एक ब्रिटिश शासकीय नौ-सैनिक के नेतृत्व में कठोर शारीरिक प्रशिक्षण के लिए जागना होगा। और यही आपके दिन का आरम्भ है! इसके बाद कई घण्टों वाली नौ-सैनिक की शिक्षा वाली कक्षाएँ, परेड डेक पर प्रशिक्षण, नेतृत्व करने के अभ्यास और मार्शल आर्ट का प्रशिक्षण होता है। यह कठोरता कई सप्ताहों तक चलती रहती है, जो एक लगातार चलने वाले सपने की तरह लगती है। बड़ी धारा के किनारे के बारे में शायद सबसे प्रसिद्ध बात यह है कि उसके पास में दलदल जैसी एक नदी है, जिसे "क्विगली" कहा जाता है। उसका पानी कीचड़ से भरा हुआ है। अक्सर साँपों को नौ-सैनिकों के पास से भागते हुए इसके उथले पानी में देखा जा सकता है। इस कारण, नौ-सैनिक की विडम्बना की तरह, जो किसी पुराने जमाने के अत्यधिक क्रूरता से आनन्द प्राप्त करने वाले सेनाधिकारी प्रशिक्षक के द्वारा सोचा गया था, किसी ने निर्णय लिया कि क्विगली के माध्यम से कई प्रशिक्षण कार्यक्रम तैराकी, दौड़ या लकड़ियाँ ढोने से समाप्त होने चाहिए!

कोई भी व्यक्ति अकेले नौसेना की अधिकारी प्रत्याशी पाठशाला की कठोरता को पूरा नहीं कर सकता। ये सभी अभ्यास मेरी पलटन और मण्डली के अन्य भावी नौ-सैनिक अधिकारियों के साथ पूरे किए गए। हमने एक साथ प्रशिक्षण लिया। हमने एक-दूसरे को ऊपर उठाया। हमने एक-दूसरे की देखभाल की। एक पूर्व सूचीबद्ध नौ-सैनिक ने, जो अधिकारी बनने का प्रयत्न कर रहा था, मुझे सिखाया कि निरीक्षण में सफल होने के लिए अपना रैक (बिस्तर) कैसे बनाया जाए और अपनी राइफल को कैसे साफ किया जाए। पचास गज आगे वाले अपने साथी को देखकर आप क्विगली में दौड़ने और तैरने के लिए प्रेरित होते हैं। जब आप दण्ड-बैठकें लगाते हैं, तो आपके सामने भावी नौ-सैनिक अधिकारी आपकी दण्ड-बैठकों की गिनती करता है और आपको आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करता है। हमने एक साथ प्रशिक्षण लिया। हमने एक साथ खाना खाया। हम एक साथ लम्बी पैदलयात्रा पर गए। हम एक

साथ स्वतंत्र हुए। सब कुछ एक साथ किया गया। और जब हमने अन्त में नौसेना की अधिकारी प्रत्याशी पाठशाला से स्नातक किया, तो हमने एक साथ परेड डेक पर पैदलयात्रा की। हम एक साथ नौ-सैनिक अधिकारियों के रूप में तैयार हुए थे। ऐसा ही हमारी आत्मिक उन्नति के साथ भी है। मसीह ने कलीसिया को एक आत्मिक बड़ी धारा के किनारे के रूप में बनाया है, जो वह स्थान है, जहाँ आत्मिक दिग्गज एक साथ तैयार होते हैं।

पौलुस के द्वारा नये नियम में अक्सर उपयोग किया जाने वाला रूपक इससे अलग नहीं है (रोमि. 12 अध्याय; 1 कुरि. 12 अध्याय; और इफि. 4 अध्याय को देखें)। जैसा कि हमने पहले देखा है कि पौलुस को कलीसिया का वर्णन एक देह के रूप में करना पसंद था। नि: सन्देह यह वही रूपक है, जिसे प्रभु यीशु ने दमिश्क के मार्ग पर पौलुस को सिखाया था, जब उसने उससे पूछा था, "हे शाऊल, हे शाऊल, तू मुझे क्यों सताता है?" (प्रेरि. 9:4)। इस विचार ने पौलुस को परेशान कर दिया। उसने प्रभु यीशु को कब सताया? यीशु ने अपने अनुयायियों को अपनी देह के अंग के रूप में स्वयं के बराबर माना, और इसलिए उसकी देह को सताना मसीह को सताने के समान था। यह आत्मिक वास्तविकता है, जो हमें स्थानीय "देह" या "मण्डली" में अनुग्रह में बढ़ने हेतु विवश करती है। प्रत्येक मसीही व्यक्ति को स्थानीय देह में मसीह की तरह प्रशिक्षित होने का प्रयत्न करना चाहिए, जहाँ उन्हें आत्मिक परिपक्वता के लिए प्रेरित किया जाएगा।

देह के सिद्धान्त को समझना

देह के इस सिद्धान्त को पूरी तरह से और अधिक समझने के लिए, हमें पवित्रशास्त्र में उस संदर्भ को देखना होगा, जहाँ इसे स्पष्ट रूप से रेखांकित किया गया है, जो कि इफिसियों का चौथा अध्याय है। इस अध्याय की पहली सोलह आयतों में, प्रेरित पौलुस हमें इस बात का सशक्त वर्ण न देता है कि हमारे पवित्रीकरण में कलीसिया कैसे कार्य करती है। हम इस खण्ड की कई आयतों को पहले ही देख चुके हैं, परन्तु यहाँ पूरा खण्ड दिया गया है:

> इसलिए मैं जो प्रभु में बन्दी हूँ, तुम से विनती करता हूँ कि जिस बुलाहट से तुम बुलाए गए थे, उसके योग्य चाल चलो, अर्थात् सारी दीनता और नम्रता सहित, और धीरज धरकर प्रेम से एक दूसरे की सह लो; और मेल के बन्धन में आत्मा की एकता रखने का यत्न करो। एक ही देह है, और एक ही आत्मा; जैसे तुम्हें जो बुलाए गए थे अपने बुलाए जाने से एक ही आशा है। एक ही प्रभु है, एक ही विश्वास, एक ही बपतिस्मा, और सब का एक ही परमेश्वर और पिता है, जो सब के ऊपर और सब के मध्य में और सब में है। पर हम में से हर एक को मसीह के दान के परिमाण के अनुसार अनुग्रह मिला है। इसलिए वह कहता है: "वह ऊँचे पर चढ़ा और बन्दियों को बाँध ले गया, और मनुष्यों को दान दिए।" (उसके चढ़ने से, और क्या पाया जाता है, केवल यह कि वह पृथ्वी के निचले स्थानों में उतरा भी था। और जो उतर गया यह वही है, जो सारे आकाश से ऊपर चढ़ भी गया कि सब कुछ परिपूर्ण करे)। उसने कुछ को प्रेरित नियुक्त करके, और कुछ को भविष्यद्वक्ता नियुक्त करके, और कुछ को सुसमाचार सुनाने वाले नियुक्त करके, और कुछ को रखवाले और उपदेशक नियुक्त करके दे दिया, जिस से पवित्र लोग सिद्ध हो जाएँ और सेवा का काम किया जाए और मसीह की देह उन्नति पाए, जब तक कि हम सब के सब विश्वास और परमेश्वर के पुत्र की पहचान में एक न हो जाएँ, और एक सिद्ध मनुष्य न बन जाएँ और मसीह के पूरे डील–डौल तक न बढ़

> जाएँ। ताकि हम आगे को बालक न रहें जो मनुष्यों की ठग –विद्या और चतुराई से, उन के भ्रम की युक्तियों के और उपदेश के हर एक झोंके से उछाले और इधर –उधर घुमाए जाते हों। वरन् प्रेम में सच्चाई से चलते हुए सब बातों में उसमें जो सिर है, अर्थात् मसीह में बढ़ते जाएँ, जिससे सारी देह, हर एक जोड़ की सहायता से एक साथ मिलकर और एक साथ गठकर, उस प्रभाव के अनुसार जो हर एक अंग के ठीक–ठीक कार्य करने के द्वारा उस में होता है, अपने आप को बढ़ाती है कि वह प्रेम में उन्नति करती जाए।

चरण 1: सही प्रेरणा

पौलुस हमें सबसे बुनियादी बात से, अर्थात् हमारे रवैये से ही निर्देश देना आरम्भ करता है। मसीह की देह में सही तरीके से प्रशिक्षित होने के लिए, आपको सही प्रेरणा की आवश्यकता पड़ती है। पौलुस इफिसियों 4:1 में इस प्रेरणा को परिभाषित करता है, “इसलिए मैं जो प्रभु में बन्दी हूँ तुम से विनती करता हूँ कि जिस बुलाहट से तुम बुलाए गए थे, उसके योग्य चाल चलो...”

नि: सन्देह पौलुस ने अभी-अभी यह समझाना समाप्त किया है कि उद्धार पूरी तरह से विश्वास के द्वारा अनुग्रह से होता है (इफि. 2:8–9)। परन्तु उद्धार के लिए अनुग्रह की इस बुलाहट को प्राप्त करने के बाद, हमें अब “जिस बुलाहट से तुम बुलाए गए थे, उसके योग्य चाल चलो।” चलना हमारे जीवन की पूरी जीवन-शैली को संदर्भित करता है। उदाहरण के लिए, पौलुस इफिसियों 5:2 में कहता है, “प्रेम में चलो जैसे मसीह ने भी तुम से प्रेम किया, और हमारे लिए अपने आप को... बलिदान कर दिया।” वह इफिसियों 5:15 में कहता है, “इसलिए ध्यान से देखो, कि कैसी चाल चलते हो: निर्बुद्धियों के समान नहीं पर बुद्धिमानों के समान चलो।” हमें अपनी आत्माओं को उद्धार दिलाने में परमेश्वर के द्वारा किए गए कार्यों के लिए उसे सम्मान देने की इच्छा से “योग्य चाल” चलनी है। हमें उसके द्वारा हमारे लिए किए गए सभी कार्यों के लिए कृतज्ञता के साथ योग्य तरीके से चलना है। पवित्र आचरण कभी भी परमेश्वर के अनुग्रह को पाने के प्रयत्न का परिणाम नहीं होता, बल्कि यह परमेश्वर के अनुग्रह का पहले से ही प्राप्त हो जाना होता है। जो लोग अनुग्रह से बचाए गए हैं, वे अनुग्रह में चलने की इच्छा रखते हैं। उद्धार की मधुर वास्तविकता हमें मसीह की देह में धार्मिकता भरा जीवन जीने के लिए प्रेरित करती है। यही हमारी प्रेरणा है। और यही एकमात्र प्रेरणा है।

इस समय हमें स्वयं से एक प्रश्न पूछना चाहिए कि यदि परमेश्वर का अनुग्रह और उद्धार हमें पवित्र जीवन जीने के लिए प्रेरित नहीं करता, तो क्या हम वास्तव में अनुग्रह को समझ पाते? पौलुस के लिए, इसका उत्तर जोर देकर कहा गया “नहीं!” है। वह रोमियों के छठवें अध्याय में स्पष्ट रूप से लिखता है कि कोई भी छुड़ाया हुआ पापी जानबूझकर आदतन पाप का जीवन बिताना जारी नहीं रखता। वह कहता है, “कदापि नहीं!” (रोमि. 6:2) इसलिए यदि हम में मसीह की आज्ञा मानने की इच्छा की कमी है, तो हमें सुसमाचार की सच्चाई की ओर लौटना चाहिए और विश्वास में होकर उसके सामने आत्मसमर्पण करना चाहिए। केवल यही वह स्थान है, जहाँ से आरम्भ करना है।

चरण 2: सही चरित्र (मसीह के जैसा होना)

अपनी प्रेरणा को समझने के बाद, हमें उस देह में सही चरित्र वाले गुणों के साथ काम करना आरम्भ करना चाहिए। दूसरे शब्दों में कहें तो हमें कलीसिया को सही गुणों में शामिल करना चाहिए। जिस तरह भारोत्तोलक विस्फोटकता, कठोरता और धीरज पर केन्द्रित मानसिकता के साथ व्यायामशाला में प्रवेश करते हैं, और जिस तरह धावक वेग, गति और स्थिरता पर केन्द्रित मानसिकता के साथ दौड़ में प्रवेश करते हैं, ठीक उसी तरह मसीही व्यक्ति को सही गुणों पर केन्द्रित होकर कलीसिया में प्रवेश करना चाहिए। उन गुणों को "मसीह के जैसा होना" शब्द में सारांशित किया जा सकता है। पौलुस इस मसीह के जैसा होने को पाँच गुणों में विभाजित करता है। वह लिखता है, "अर्थात् सारी दीनता और नम्रता सहित, और धीरज धरकर प्रेम से एक दूसरे की सह लो; और मेल के बन्धन में आत्मा की एकता रखने का यत्न करो।"

ये गुण इस प्रकार हैं: दीनता, नम्रता, धीरज, सहनशीलता और आत्मिक एकता बनाए रखने की उत्सुकता (इफि. 4:2, 3)। पहले दो गुण (दीनता, नम्रता) उस मानसिकता से जुड़े हुए हैं, जो हमें अपने बारे में रखनी चाहिए। तीसरे और चौथे गुण (धीरज, सहनशीलता) दूसरों के प्रति हमारी मान सिकता से जुड़े हुए हैं। और पाँचवाँ गुण ("शान्ति के बन्धन में आत्मा की एकता" को बनाए रखना) वास्तव में कलीसिया के प्रति सामान्य मानसिकता के बारे में एक सारांशित कथन है।

मसीह के जैसे पाँच गुण

गुण के प्रकार	कलीसिया में पाए जाने वाले गुण (मसीह के जैसा होना)	
स्वयं के प्रति मानसिकता	दीनता (इफि. 4:2)	नम्रता (इफि. 4:2)
दूसरों के प्रति मानसिकता	धीरज (इफि. 4:2)	सहनशीलता (इफि. 4:2)
कलीसिया के प्रति मानसिकता	आत्मा की एकता बनाए रखने के लिए उत्सुक (इफि. 4:3)	

यहाँ उन गुणों की सामान्य परिभाषाएँ दी गई हैं:

1. दीनता – निम्न स्थान लेना; यह जानना कि आप वास्तव में परमेश्वर के सामने कौन हैं; दूसरों को अपने से आगे रखना। फिलिप्पियों 2:3 में पौलुस इसी शब्द का उपयोग करता है, "विरोध या झूठी बड़ाई के लिए कुछ न करो, पर दीनता से एक दूसरे को अपने से अच्छा समझो।"

2. नम्रता – विनम्रता से काम लेना; किसी व्यक्ति की शक्ति को नियंत्रित करना; दबंग होने की भावना नहीं बल्कि दयालुता की भावना प्रदर्शित करना। यदि आपने कभी किसी ऐसे प्रोफेसर का सामना किया है, जो सोचता है कि वह बहुत बड़ा व्यक्ति है, तो सम्भवत: वह लोगों के साथ घमण्डी, दबंग तरीके से व्यवहार करता होगा। दीनता इसके

ठीक विपरीत होती है। यह नम्रता के साथ निकटता से जुड़ी हुई है, जिसका अर्थ है कि यह विनम्रता और दीनता की मुद्रा है। इफिसियों 4:32 को दीनता की परिभाषा के रूप में उपयोग किया जा सकता है: "एक दूसरे पर कृपालु और करुणामय हो, और जैसे परमेश्वर ने मसीह में तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी एक दूसरे के अपराध क्षमा करो।"

3. धीरज – दबाव में शान्ति बनाए रखने की अवस्था। जब दूसरे लोग हमारी अपेक्षाओं पर खरे नहीं उतरते, तो हमें धीरज धरना चाहिए। मैं एक लम्बी यात्रा के लिए अपने परिवार की कार में सामान रखने का प्रयत्न करने के बारे में सोचता हूँ। हर माता-पिता को पता है कि बच्चों को घूमने-फिरने के लिए तैयार करने का प्रयत्न करने में कितनी चुनौतियाँ आती हैं और इसके परिणामस्वरूप अनिवार्य "दबाव" भी आता है। परन्तु "धीरज" वह फल है, जिसे पवित्र आत्मा हमारे जीवन में उत्पन्न करता है (गला. 5:22)। परमेश्वर के अनुग्रह से, हम दूसरों की कठिनाइयों का सामना करते हुए भी "शान्त" रह सकते हैं और हमें रहना भी चाहिए।

4. प्रेम से एक दूसरे की सह लेना – ऊपर बताए गए धीरज के समान, यह गुण सहनशीलता से जुड़ा हुआ है। एक अर्थ में इसका तात्पर्य यह है कि हम एक व्यक्ति को उसकी कमियों के बावजूद स्वीकार करते हैं। ऐसा करने में हमें जो बात सक्षम बनाती है, वह प्रेम है! मसीह का प्रेम हमें "एक दूसरे की सह लेने" के लिए बा ध्य करता है। 1 कुरिन्थियों 13:7 में पौलुस कहता है, "वह (अर्थात् प्रेम) सब बातें सह लेता है, सब बातों की प्रतीति करता है, सब बातों की आशा रखता है, सब बातों में धीरज धरता है।" इस सम्बन्ध में याद रखने वाली एक महत्वपूर्ण बात यह है कि हमारा प्रभु हम में से प्रत्येक के विषय में बहुत कुछ सहन करता है। हम में से प्रत्येक बहिष्कृत किए जाने के योग्य है। परन्तु मसीह हमें अपने प्रेम और अनुग्रह में स्वीकार करता है। वह हमारी अनाज्ञाकारिता के बावजूद हमें सहन करता है। इसलिए जैसे मसीह ने हमारे साथ बहुत कुछ सहा है, ठीक वैसे ही हमें भी अन्य विश्वासियों के साथ बहुत कुछ सहना चाहिए।

5. आत्मा की एकता बनाए रखने के लिए उत्सुक – यह एक सारांशित गुण है, जो हमारे जीवन को कलीसिया में शामिल करता है। हमें पवित्र आत्मा के द्वारा बनाई गई देह की एकता को बनाए रखने के बारे में सतर्क रहना चाहिए। नये नियम में एक मसीही जन को कभी भी एकता की रचना करने के लिए नहीं कहा गया है। इसके बजाय, मसीही जन को पवित्र आत्मा के द्वारा पहले से रची गई एकता को बनाए रखने के लिए कहा गया है। यह ध्यान देने योग्य एक बहुत ही महत्वपूर्ण अन्तर है, क्योंकि हम एक ऐसे सुसमाचार प्रचार वाले संसार में रहते हैं, जो सार्वभौमिकता, नस्लीय सामंजस्य और अन्य प्रकार की एकीकृत रणनीतियों पर जोर देता है, जो आत्मिक एकता के बाइबल सम्बन्धी सभी सिद्धान्त को समझने में विफल रहती हैं। हम कभी भी एकता की रचना नहीं करते। वास्तव में, हम ऐसा कर ही नहीं सकते। इसके बजाय, पवित्र आत्मा एकता की रचना करता है, और फिर हमें इसे बनाए रखने के लिए कहा जाता है। इस एकता का वर्णन करने के लिए प्रेरित पौलुस जिस वाक्यांश का उपयोग करता है, वह है, "मेल के बन्धन में।" "बन्धन" के लिए वह जिस शब्द का उपयोग करता है, वही शब्द मानवीय शरीर में तन्तुओं या नसों (सण्डेसमोस) का वर्णन करने के लिए उपयोग किया जाता है। वह कुलुस्सियों 3:14 में भी इसी शब्द का उपयोग करता है, "इन सब के ऊपर प्रेम को जो सिद्धता का कटिबन्ध है बाँध लो।" जो बात पौलुस कह

रहा है, वह यह है कि पवित्र आत्मा ने हमें पहले से ही अन्य मसीही लोगों के साथ मेल और प्रेम में बाँध दिया है। यह बन्धन राष्ट्रीयताओं, भाषाओं और संस्कृतियों से परे है। यह एक आत्मिक बन्धन है। इस बन्धन को नष्ट करना ही शैतान का एक मुख्य उद्देश्य है, जिसे वह अक्सर स्थानीय मण्डलियों में करता है। अत: पौलुस का निर्देश यह है कि हम इस आत्मिक एकता को बनाए रखने में सतर्क रहें और शैतान को पैर जमाने का अवसर न दें।

चरण 3: सही एकता

प्रत्येक कलीसिया को ठीक से काम करने के लिए आवश्यक है कि उसका निर्माण सही एकता पर किया जाए।

मानो हमारी जिज्ञासा को संतुष्ट करने के लिए, पौलुस फिर इसके सार का वर्णन करता है। वह कहता है, "एक ही देह है, और एक ही आत्मा; जैसे तुम्हें जो बुलाए गए थे अपने बुलाए जाने से एक ही आशा है। एक ही प्रभु है, एक ही विश्‍वास, एक ही बपतिस्मा, और सब का एक ही परमेश्‍वर और पिता है, जो सब के ऊपर और सब के मध्य में और सब में है" (इफि. 4:4-6)।

आप देखेंगे कि पौलुस ने सात "आत्मिक एकीकरणकर्ता" सूचीबद्ध किए हैं। बाइबल का विचारशील छात्र यह याद रखें कि सात सिद्धता की संख्या है। यह एक अलौकिक संख्या है। दूसरे शब्दों में कहें, तो पौलुस जिस एकता का वर्णन कर रहा है, वह एक सिद्ध एकता है। मूल यूनानी पाठ में, पौलुस ने चौथी आयत में "ही है" वाक्यांश का उपयोग भी नहीं किया है। वह केवल "एक देह, एक आत्मा..." और इसी तरह अन्य बातें कहता है। वह इस एकता का वर्णन करने में सरल घोषणाओं को सूचीबद्ध करता है, जो सभी "एक" शब्द के साथ योग्य हैं। इस सिद्ध एकता को देखने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि मसीह ने हमें अपने आप में पूरी तरह से "एक" बना दिया है। ध्यान देने योग्य एक और रोचक पहलू यह है कि ईश्वरत्व के प्रत्येक व्यक्तित्व के पहलुओं में एकता का वर्णन किया गया है। पहले तीन एकीकरणकर्ता पवित्र आत्मा के द्वारा लाए जाते हैं (एक ही देह, एक ही आत्मा और एक ही आशा जो हमारी बुलाहट से जुड़ी हुई है)। बाकी के तीन एकीकरणकर्ता पुत्र के द्वारा लाए जाते हैं (एक ही प्रभु, एक ही विश्वास और एक ही बपतिस्मा।) अन्त में, सातवाँ एकीकरणकर्ता पिता के द्वारा लाया जाता है (सब का एक ही पिता, "जो सब के ऊपर और सब के मध्य में और सब में है")।

सात आत्मिक एकीकरणकर्ता

त्रिएकत्व के सदस्य	इफिसियों 4:4–6 में पाए जाने वाले आत्मिक एकीकरणकर्ता		
परमेश्वर पवित्र आत्मा	1) एक ही देह	2) एक ही आत्मा	3) एक ही आशा जो हमारी बुलाहट से जुड़ी हुई है
परमेश्वर पुत्र	4) एक ही प्रभु	5) एक ही विश्वास	6) एक ही बपतिस्मा
परमेश्वर पिता	7) एक ही परमेश्वर और पिता है, जो सब के ऊपर और सब में है		

जब मार्टिन लॉयड-जोन्स ने इफिसियों 4 अध्याय से प्रचार किया, तो उन्होंने इन सात एकीकरणकर्ताओं में से प्रत्येक पर एक अलग सन्देश दिया। हमारे पास उनमें से प्रत्येक पर ध्यान लगाने के लिए इतना समय नहीं है, परन्तु उनमें से प्रत्येक का गहन अध्ययन बहुत समृद्ध है। यहाँ एक संक्षिप्त सारांश दिया गया है:

1. एक ही देह – कलीसिया मसीह में एक आत्मिक देह में एक साथ जुड़ी हुई है। रोमियों 12:5 में पौलुस कहता है, "वैसा ही हम जो बहुत हैं, मसीह में एक देह होकर आपस में एक दूसरे के अंग हैं।" वह कुलुस्सियों 3:15 में भी कहता है, "मसीह की शान्ति जिसके लिए तुम एक देह होकर बुलाए भी गए हो, तुम्हारे हृदय में राज्य करे।" यह कलीसिया की तस्वीर है। मसीह ने हमें आत्मा की सामर्थ्य में एक जीवन्त जैविक इकाई में एक साथ बुना है। पौलुस उन भागों की इस जैविक एकता का आश्चर्यजनक तरीके से वर्णन करते हुए 1 कुरिन्थियों में इस बात को रेखांकित करता है कि हम उस देह के विभिन्न अंग या भाग हैं (1 कुरि. 12:14):

जैसे कि अंग तो बहुत सारे हैं, फिर भी देह एक ही है। आँख हाथ से नहीं कह सकती कि "मुझे तेरी कोई आवश्यकता नहीं है," और फिर सिर पाँवों से नहीं कह सकता कि "मुझे तेरी कोई आवश्यकता नहीं है।" इसके विपरीत, देह के जो अंग दुर्बल दिखते हैं, वे आवश्यक होते हैं और देह के जिन अंगों को हम कम आदर के योग्य समझते हैं, उन्हें हम अधिक आदर देते हैं और हमारे उन दुर्बल अंगों को अधिक शालीनता से प्रस्तुत किया जाता है, जिसकी आवश्यकता हमारे अधिक शालीन अंगों को नहीं होती। परन्तु परमेश् वर ने देह को इस तरह बनाया है कि जिस अंग को आदर नहीं मिला, उसे अधिक आदर दिया जाए, ताकि देह में फूट न पड़े, बल्कि वे अंग एक-दूसरे की बराबर चिन्ता करें। यदि एक अंग दु: ख उठाए, तो सब मिलकर दु: ख उठाएँ; यदि एक अंग को सम्मान मिले, तो सब मिलकर आनन्दित हों।

2. एक ही आत्मा – इसके अतिरिक्त, हर मसीही व्यक्ति में एक ही पवित्र आत्मा का वास होता है। इसका अर्थ है कि हर मसीही व्यक्ति को "नये जन्म" (यूह. 3:5-8) का एक ही आत्मिक अनुभव होता है। हर मसीही जन का "ईश्वरीय स्वभाव" (2 पत. 1:4) के साथ एक ही तरह का सम्पर्क होता है। हर मसीही जन की आत्मा आत्मिक रूप से शुद्ध होती है (यहे. 36:25)। हर मसीही जन एक ही तरह का आत्मिक फल उत्पन्न करता है (गला. 5:22)। 1 कुरिन्थियों 12:13 में पौलुस कहता है, "हम सब को एक ही आत्मा पिलाया गया।" वह पहले इफिसियों में कहता है, "तुम पर भी... प्रतिज्ञा किए हुए पवित्र आत्मा की छाप लगी" (इफि. 1:13)।

तो फिर, मसीही आत्मिक जीवन, हर मसीही व्यक्ति के लिए काफी हद तक एक समान है। यह स्पष्ट है कि हम सभी के पास अपनी अनूठी परीक्षाएँ और अनुभव होते हैं, परन्तु ये सब एक ही पवित्र आत्मा के द्वारा मध्यस्थता करते हैं। जब मैं बड़ा हुआ, तो मैं अपनी माता के साथ *ऐनी ऑफ ग्रीन गैबल्स (Anne of Green Gables)* फ़िल्में देखा करता था। उन फिल्मों में ऐनी अक्सर अपने सबसे करीबी मित्रों को "एक जैसी आत्माओं वाले" कहती थी। उसके कहने का अर्थ यह था कि उनकी मित्रता उनकी एक जैसी "आत्मा" या हितों के कारण एक साथ बुनी हुई थी। मसीही विश्वास में यह बात और भी अधिक सच है, अर्थात् हम सब में एक ही पवित्र आत्मा वास करता है।

3. एक ही आशा जो तुम्हारे बुलाए जाने से जुड़ी हुई है – हर मसीही जन, अपने जीवन में पवित्र आत्मा की बुलाहट के कारण, अपना मन स्वर्ग पर टिकाए रखता है। इफिसियों 1:18 में पौलुस कहता है, "तुम्हारे मन की आँखें ज्योतिर्मय हों कि तुम जान लो कि उसकी बुलाहट की आशा क्या है, और पवित्र लोगों में उसकी मीरास की महिमा का धन कैसा है।" मसीही जन की आशा यही है। इसी कारण से हर एक मसीही जन एक बादल को ताकने वाला है, जो हमारे प्रभु की वापसी की प्रतीक्षा में आसमानों की ओर देखता है। हमारी अन्तिम आशा संसार की वस्तुएँ नहीं, बल्कि मसीह और उसका अनन्त राज्य है (2 कुरि. 4:16–18)।

4. एक ही प्रभु – सभी मसीही एक प्रभु और उद्धारकर्ता की आराधना करते हैं। जब मैं जवान था, तब सुसमाचार प्रचार वाले संसार में इस बात पर बहस चल रही थी कि क्या हर एक मसीही जन के लिए उद्धार पाने हेतु प्रभु के रूप में यीशु के सामने समर्पण करना आवश्यक है। कुछ लोगों ने तर्क दिया कि इससे उद्धार करने वाले विश्वास में एक "कार्य" जुड़ जाता है। यद्यपि, सच्चाई यह है कि सुसमाचार का सन्देश एक ऐसे विश्वास की माँग करता है, जो कि समर्पण करने वाला विश्वास हो, अर्थात् एक ऐसा विश्वास है, जो यीशु मसीह के प्रभुत्व का अंगीकार करता हो। रोमियों 10:13 में पौलुस कहता है, "क्योंकि, "जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वह उद्धार पाएगा।" जब हम मसीह पर भरोसा करते हैं, तो हम "उसे प्रभु नहीं बनाते।" वह प्रभु ही है, और हम तो केवल उस पर अपने भरोसे का अंगीकार करते हैं। इस कारण, सभी सच्चे मसीही यीशु मसीह के प्रभुत्व का अंगीकार करते हैं। पौलुस कहता है कि यह एक सार्वभौमिक सिद्धान्त है कि "यदि हम जीवित हैं, तो प्रभु के लिए जीवित हैं; और यदि मरते हैं, तो प्रभु के लिए मरते हैं; अत: हम जीएँ या मरें, हम प्रभु ही के हैं" (रोमि. 14:8)। व्यावहारिक रूप से कहें तो इसका अर्थ है कि हर एक मसीही जन के जीवन का स्वामी मसीह है। हम "परमेश्वर के दास" हैं (रोमि. 6:22)। इस कारण, हमें हर परिस्थिति में प्रभु की इच्छा पूछनी चाहिए और उसका अनुसरण करना चाहिए (रोमि. 12:2)।

5. एक ही विश्वास – इसके अतिरिक्त, यीशु मसीह में, हम एक जैसे विश्वास में एक होते हैं। पौलुस का "एक ही विश्वास" से अर्थ यह है कि हम एक ही मूल सत्य पर विश्वास करते हैं। कभी-कभी इन सत्यों को "प्रथम स्तर पर आने वाले सिद्धान्त" कहा जाता है। मैंने हाल ही में सुना कि जॉन मैकआर्थर ने इन सिद्धान्तों को मसीही विश्वास की "संचरण पद्धति" कहा। यह एक बढ़िया रूपक है। वे ऐसे महत्वपूर्ण सिद्धान्त हैं, जो मसीही जीवन को चलाते हैं। यही कारण है कि "विश्वास" को कभी-कभी उस अस्पर्शनीय वास्तविकता के रूप में संदर्भित किया जाता है, जो हमारे बाहर की है। उदाहरण के लिए, पौलुस ने कहा कि उसने "विश्वास" का प्रचार किया (गला. 1:23) और उसने "विश्वास की आज्ञाकारिता" के लिए परिश्रम किया (रोमि. 1:5)। यहूदा कहता है कि "उस विश्वास के लिए पूरा यत्न करो जो पवित्र लोगों को एक ही बार सौंपा गया था" (यहू. 3)। कलीसिया के प्रारम्भिक अंगीकार कथन, जैसे कि प्रेरितों का अंगीकार कथन और नीकिया का अंगीकार कथन, इन सत्यों को चित्रित करने के लिए लिखे गए थे, जिन पर विश्वास किया जाना अवश्य है। सामान्य रूप से कहें तो जिन सिद्धान्तों पर विश्वास किया जाना चाहिए वे इस प्रकार हैं:

- त्रिएकत्व का सिद्धान्त। परमेश्वर तीन व्यक्तित्वों में एक परमेश्वर है। परमेश्वर के वे तीनों व्यक्तित्व, परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र और परमेश्वर पवित्र आत्मा हैं (मत्ती 28:20)।

- सृष्टि का सिद्धान्त। परमेश्वर सब वस्तुओं के पीछे पाए जाने वाला रचनात्मक प्रतिनिधि है। उसने आदि में ही मानवजाति सहित सब वस्तुओं की रचना की (उत्प. 1:1; यूह. 1:1)।
- पाप और न्याय का सिद्धान्त। प्रथम मनुष्य, अर्थात् आदम ने परमेश्वर की व्यवस्था को तोड़ा और सम्पूर्ण मानवजाति पर पाप लाया (रोमि. 5:12)। इस कारण हर व्यक्ति जो कभी जीवित रहा, वह पापी है (रोमि. 3:23)। परमेश्वर के सामने हमारे पाप के कारण, हम परमेश्वर के न्याय और क्रोध को पाने के योग्य हैं, जिसे परमेश्वर अन्तिम दिन लाएगा (रोमि. 6:23; प्रेरि. 10:42)।
- पवित्रशास्त्र का सिद्धान्त। परमेश्वर ने अपने वचन के माध्यम से स्वयं को प्रकट किया है, और ऐसा करने के लिए उसने मनुष्यों के माध्यम से पूरी तरह से बात की है (2 पत. 1:21; 2 तीमु. 3:16)। इस कारण बाइबल मूल पाण्डुलिपियों में त्रुटिहीन और अचूक है।
- मसीह का सिद्धान्त। परमेश्वर के अनन्त पुत्र ने हमारी मानवता को अपनाया और हमारा प्रतिनिधि बनने के लिए एक निष्पाप जीवन व्यतीत किया (यूह. 1:1-18; फिलि. 2:5-11)।
- छुटकारे का सिद्धान्त। क्रूस पर, यीशु मसीह पापी नहीं बना, बल्कि उसने हमारे पाप के दण्ड को अपने ऊपर ले लिया। अपनी मानवता में, उसने हमारे पापों के लिए परमेश्वर के अनन्त क्रोध को अपने ऊपर ले लिया (2 कुरि. 5:21; रोमि. 3:25)।
- पुनरुत्थान का सिद्धान्त। अपनी मृत्यु के तीन दिन बाद यीशु मसीह मरे हुओं में से फिर से जी उठा। वह उन सभी लोगों में से "पहला फल" है, जो उस पर विश्वास करते हैं, और जो उसके पुनरुत्थान में उसका अनुसरण करेंगे (1 कुरि. 15 अध्याय देखें)।
- दूसरे आगमन और अनन्त दशा का सिद्धान्त। प्रभु यीशु जीवितों और मरे हुओं का न्याय करने, सब वस्तुओं को नया बनाने और अपना अनन्त राज्य स्थापित करने के लिए वापस आ रहा है (1 थिस्स. 4:13-18; प्रका. 21, 22)।

6. एक ही बपतिस्मा – बपतिस्मा एक प्रतीक है, जो मसीह के साथ हमारी एकता की आत्मिक वास्तविकता का प्रतिनिधित्व करता है। हम उसकी मृत्यु, गाड़े जाने और पुनरुत्थान में उसके साथ जुड़े हुए हैं। बपतिस्मा इस वास्तविकता को चित्रित करता है। जब हम पानी में नीचे जाते हैं, तो यह मसीह के साथ हमारी मृत्यु और क्रूस पर चढ़ने का प्रतिनिधित्व करता है (गला. 2:20)। जब हम पानी से ऊपर आते हैं, तो यह उसमें हमारे नये जीवन का प्रतिनिधित्व करता है (2 कुरि. 5:17)। इस कारण, यीशु ने आज्ञा दी कि सभी मसीही शिष्यों को यह बाहरी प्रतीक प्राप्त हो, जो हमारे आत्मिक बपतिस्मा की वास्तविकता को दर्शाता है (मत्ती 28:19, 20; रोमि. 6:4)। सभी मसीही जन मसीह में इसी बपतिस्मा को प्राप्त करते हैं, जो मसीही विश्वास का आरम्भिक संकेत है।

7. एक ही परमेश्वर और पिता जो सब के ऊपर, सब के मध्य में और सब में है –अन्त में, वह एकता परमेश्वर पिता के ज्ञान के साथ समाप्त होती है। परमेश्वर को जानने से बढ़कर कोई उच्च आत्मिक अनुभव नहीं है (यूह. 17:3)। मसीही आत्मिक रूप से यहाँ स्तुतिगान के साथ समाप्त करते हैं। यही बात हमें आराधना करने और एक साथ इकट्ठा होने के लिए प्रेरित करती है (इब्रा. 10:25)। हम परमेश्वर की सुन्दरता से मंत्रमुग्ध हैं। हम उसकी पारलौकिक पवित्रता से अभिभूत हैं। हम देखते हैं कि परमेश्वर को जानना सबसे मधुर अस्तित्व है, जिसे मनुष्य इस धरती पर

पा सकता है।

जैसे कि आप देख सकते हैं, परमेश्वर ने कलीसिया में जिस एकता की रचना की है, वह एक अद्भुत एकता है। यही एकता मसीह की देह में हमारी भागीदारी की माँग करती है।

चरण 4: सही वरदान

मसीह की देह में हमारी भागीदारी के लिए, प्रभु ने हमें आत्मिक वरदान के रूप में एक अद्भुत वस्तु दी है। स्वर्ग में अपने महिमामय सिहासन पर विराजमान होने के भाग के रूप में, उसने अपनी कलीसिया में हम पर आत्मिक वरदानों की वर्षा की। पौलुस कहता है:

पर हम में से हर एक को मसीह के दान के परिमाण के अनुसार अनुग्रह मिला है। इसलिए वह कहता है: "वह ऊँचे पर चढ़ा और बन्दियों को बाँध ले गया, और मनुष्यों को दान दिए।" (उसके चढ़ने से, और क्या पाया जाता है केवल यह कि वह पृथ्वी के निचले स्थानों में उतरा भी था। और जो उतर गया यह वही है, जो सारे आकाश से ऊपर चढ़ भी गया कि सब कुछ परिपूर्ण करे)।

इन आयतों में एक राजा का चित्र दर्शाया गया है, जो एक बड़ी जीत के बाद विजयी होकर अपने राज्य में वापस आता है, और फिर अपनी प्रजा को युद्ध की बड़ी लूट से भर देता है। मसीह ने देहधारण करके, केवल स्थापित किए गए मसीहा सम्बन्धी राजा के रूप में अपनी सेवकाई के अन्त में स्वर्ग पर "चढ़ने" के लिए पृथ्वी पर "उतरा"। ऐसा करने में वह अपने लोगों पर "अनुग्रह" बरसाता है, जिसका शाब्दिक अर्थ "वरदान" है। यह अनुग्रह उद्धार करने वाला अनुग्रह नहीं, बल्कि "आत्मिक वरदान" है। ये वरदान आत्मिक योग्यता प्रदान करते हैं, जिसका उपयोग हम में से प्रत्येक को सम्पूर्ण देह के निर्माण के लिए करना चाहिए। पौलुस कहता है, "ये सब प्रभावशाली कार्य वही एक आत्मा कराता है, और जिसे जो चाहता है वह बाँट देता है" (1 कुरि. 12:11)। इसके अतिरिक्त, एक हिमपात की तरह, प्रत्येक मसीही जन प्राप्त किए गए उस आत्मिक वरदान या वरदानों में अनूठा है; कोई भी दो मसीही लोग अपने आत्मिक वरदान में बिलकुल समान नहीं हैं (1 कुरि. 12:4)। अक्सर, प्रत्येक विश्वासी को कई आत्मिक वरदान दिए जाते हैं, और उन्हें विभिन्न स्तरों में दिया जाता है। उदाहरण के लिए, शिक्षा देने के वरदान वाले लोग भी अलग-अलग तरीकों से वरदान पाए हुए होते हैं: कुछ बच्चों को पढ़ाने के लिए, अन्य कॉलेज के छात्रों को पढ़ाने के लिए, और अन्य सेमिनरी के छात्रों को पढ़ाने के लिए। परमेश्वर अनिवार्य रूप से हम में से प्रत्येक को सेवा करने के लिए विभिन्न वरदानों और उनके अनुपात के साथ अ नूठे तरीकों से तैयार करता है। मैं विश्वास करता हूँ कि पवित्रशास्त्र के ग्रंथ-संग्रह के पूरा होने के साथ ही, अद्भुत काम, अन्यभाषाएँ और भविष्यद्वाणियों के उच्च वरदान निष्क्रिय हो गए हैं (1 कुरि. 13:8 -10)। परन्तु अन्य वरदान आज भी कलीसिया में सक्रिय हैं। इनमें शामिल हैं:

- सेवा का वरदान (रोमि. 12:7)
- सिखाने का वरदान (रोमि. 12:7)
- उपदेश देने/प्रचार करने का वरदान (रोमि. 12:8)

- उदारता/दान देने का वरदान (रोमि. 12:8)
- अगुवाई का वरदान (रोमि. 12:8)
- दया का वरदान (रोमि. 12:8)
- बुद्धि का वरदान (1 कुरि 12:8)
- विश्वास का वरदान (1 कुरि 12:9)
- परख का वरदान (1 कुरि 12:10)

यह सूची सम्पूर्ण नहीं है। और न ही नये नियम में पाई जाने वाली कोई भी वरदान वाली सूची पूरी तरह सम्पूर्ण है। इन वरदानों की एक किस्म होती है, जो सब के सब एक ही पवित्र आत्मा के माध्यम से दिए जाते हैं। इसमें महत्वपूर्ण सिद्धान्त यह है कि आप अपने आत्मिक वरदानों को जानें, और फिर आप उन्हें देह में उपयोग करना आरम्भ करें।

चरण 5: सही अगुवे

हर किसी को अलग-अलग आत्मिक वरदान मिलने के कारण, आप सोचेंगे कि कलीसिया बहुत ही अधिक अव्यवस्थित हो जाएगी। मुझे मालूम है कि यह मूर्खतापूर्ण लग सकता है, परन्तु यदि हर कोई एक अनूठा हिमपात है, तो ऐसा लगेगा कि कलीसिया एक बर्फीली आँधी हो जाएगी! उस देह को व्यवस्थित करने में सहायता के लिए क्या किया गया है? उस देह में व्यवस्था और संगठन बनाने में सहायता के लिए, पौलुस कहता है कि मसीह कलीसिया को अगुवे भी देता है। परमेश्वर के वचन की घोषणा करने के माध्यम से, वे अगुवे उस देह में व्यवस्था और आत्मिक गतिशीलता लाते हैं। इफिसियों 4:11-12 में पौलुस कहता है, "उसने कुछ को प्रेरित नियुक्त करके, और कुछ को भविष्यद्वक्ता नियुक्त करके, और कुछ को सुसमाचार सुनाने वाले नियुक्त करके, और कुछ को रखवाले और उपदेशक नियुक्त करके दे दिया, जिस से पवित्र लोग सिद्ध हो जाएँ और सेवा का काम किया जाए और मसीह की देह उन्नति पाए।"

पौलुस ने चार पदवियों की सूची दी है, जो परमेश्वर ने कलीसिया को दिए हैं (कुछ लोग पाँच के लिए तर्क देते हैं)। वे प्रेरित, भविष्यद्वक्ता, सुसमाचार सुनाने वाले और रखवाले-उपदेशक हैं। मैं संक्षेप में प्रत्येक भूमिका को परिभाषित करूँगा:

प्रेरित – प्रेरित के रूप में योग्य होने के लिए, किसी को प्रभु यीशु की सेवकाई का गवाह होना है और फिर उसी के द्वारा उसे व्यक्तिगत् रूप से नियुक्त किया जाना है (प्रेरि. 1:21–26)। प्रेरित पौलुस ने स्वयं को "प्रेरितों में सबसे छोटा" माना, क्योंकि वह प्रभु की सेवकाई के लिए एक दूरदर्शी था, और वह प्रेरितों में से सबसे अन्तिम नियुक्त किया गया था (1 कुरि. 15:9)। वे प्रेरित ही थे, जिन्होंने निर्धारित किया था कि मसीह के नाम और मार्गदर्शन के अन्तर्गत् कलीसिया को कैसे कार्य करना था (यूह. 14:27)। वे प्रेरित ही थे, जिन्हें हमारे प्रभु ने अपने नये नियम की कलीसिया को स्थापित करने के लिए "राज्य की कुंजियाँ" दीं (मत्ती 16:19)। जब से हमारा प्रभु स्वर्ग पर चढ़ा है, तब से पौलुस के अतिरिक्त किसी अन्य को प्रेरित नियुक्त नहीं किया गया है। इस कारण, जब अन्त में प्रेरित यूहन्ना की पतमुस टापू पर मृत्यु हुई, तो प्रेरित का पद समाप्त हो गया। आधुनिक समय में कोई प्रेरित नहीं हैं। फिर

भी हम उन परम्पराओं पर स्थिर हैं, जो उन्होंने स्थापित कीं, जो हमें परमेश्वर के वचन के माध्यम से दी गई हैं।

भविष्यद्वक्ता – भविष्यद्वक्ता वह व्यक्ति होता है, जो पवित्र आत्मा के द्वारा सशक्त किए जाने के माध्यम से परमेश्वर का वचन बोलता है (2 पत. 1:21)। नये नियम के ग्रंथ-संग्रह के पूरा होने और प्रसारित होने से पहले, हर कलीसिया में लोगों को परमेश्वर की ओर से प्रकाशन प्राप्त करने की अत्यन्त आवश्यकता थी। इस कारण, आरम्भिक कलीसिया में, परमेश्वर ने इस कमी को पूरा करने के लिए भविष्यद्वक्ताओं को खड़ा किया। फिलिप्पुस की चार पुत्रियों के बारे में कहा जाता है कि वे भविष्यद्वाणी करती थीं (प्रेरि. 21:9)। अगबुस भविष्यद्वक्ता ने आकर पौलुस पर भवि ष्यद्वाणी की कि उसे यरूशलेम में पकड़ लिया जाएगा (प्रेरि. 21:10-14)। पौलुस ने बताया कि आरम्भिक कलीसियाओं में कई भविष्यद्वक्ताओं ने भविष्यद्वाणी की (1 कुरि. 14:3)। हम मरकुस, लूका, यहूदा, याकूब और इब्रानियों के भविष्यद्वक्ताओं के लेखक पर भी विचार कर सकते हैं, क्योंकि उन्होंने नये नियम के ग्रंथ-संग्रह में योगदान दिया था, फिर भी उन्हें प्रेरित नहीं माना गया। जब नये नियम का ग्रंथ -संग्रह पूरा हुआ (प्रका. 22:18, 19), तो कलीसिया में भविष्यद्वक्ता के पद ने काम करना बन्द कर दिया। पौलुस स्पष्ट रूप से कहता है, “भविष्यद्वाणियाँ हों, तो समाप्त हो जाएँगी...” (1 कुरि. 13:8)।

सुसमाचार सुनाने वाले – सुसमाचार सुनाने वाले वे लोग थे, जिनके पास एक बड़े दायरे वाली सेवकाई थी। जैसा कि उनके नाम से ही मालूम होता है, उनकी जिम्मेदारी सुसमाचार का प्रचार करना, खोए हुए लोगों को मसीह में जीतना और कलीसियाओं की स्थापना में परिश्रम करना था। हम आज के समय में “कलीसिया स्था पित करने वालों” के बारे में बात करते हैं, परन्तु एक “कलीसिया स्थापित करने वाला” तकनीकी रूप से उस श्रेणी में आता है, जिसे नये नियम में “सुसमाचार सुनाने वाले” के रूप में संदर्भित किया जाता है। आरम्भिक सुसमाचार सुनाने वालों में तीमुथियुस, तीतुस, तुखिकुस, तिरतियुस, लूकियुस, सोसिपत्रुस और कई अन्य शामिल थे। ये लोग आत्माओं को जीतने और कलीसियाओं का निर्माण करने के लिए एक घूमते -फिरते हुए सुसमाचार सुनाने वाली सेवकाई में शामिल थे। पौलुस ने तीमुथियुस को विशेष रूप से “सुसमाचार प्रचार का काम करने” के लिए कहा (2 तीमु. 4:5)। आधुनिक समय के उदाहरणों में जॉर्ज व्हाइटफील्ड, डी. एल. मूडी या बिली ग्राहम शामिल होंगे। निश्चित रूप से इन लोगों को सुसमाचार का प्रचार करने के लिए तो बुलाया गया था, परन्तु उन्हें इसे बड़े स्तर पर प्रचार करने और कलीसियाओं का निर्माण और पुनरुद्धार करने के लिए बुलाया गया था।

रखवाले-उपदेशक – रखवाले-उपदेशक वे पुरुष हैं, जिन्हें स्थानीय कलीसिया में पूर्णकालिक रखवाली/उपदेश की सेवकाई के लिए बुलाया जाता है। मेरा अनुमान है कि सभी रखवाले-उपदेशक प्राचीन तो होते हैं, परन्तु सभी प्राचीनों को रखवाले-उपदेशक के रूप में वरदान नहीं मिलता (1 तीमु. 3 अध्याय औ र तीतुस 1 अध्याय में प्राचीन की आवश्यकताओं को देखें)। एक रखवाला -उपदेशक वह प्रचारक होता है, जिसे कलीसिया की पूर्णकालिक शिक्षण सेवकाई में प्रवेश करने के लिए परमेश्वर के द्वारा बुलाया जाता है। जिस तरीके से रखवाले-उपदेशक को पहचाना जाता है, वह उनके प्रचार और शिक्षा देने के वरदानों से होता है। याद रखें कि वह मसीह ही है, जो उन्हें कलीसिया को देता है। ये पुरुष मसीह की स्थानीय देह में “परमेश्वर के सारे अभिप्राय” सिखाने के लिए विश्वासयोग्य होते हैं और बराबरी वाली पदवियों पर विराजमान प्रथम व्यक्ति के रू प में प्राचीनों को नेतृत्व प्रदान करने के लिए

विश्वासयोग्य होते हैं (प्रेरि. 20:27)। हो सकता है कि इनमें ऐसे पुरुष हों, जिन्हें "रखवाले -उपदेशक" के रूप में वरदान मिला हो, और जो प्रत्येक कलीसिया के प्राथमिक रखवाले-उपदेशक के अधीन होकर काम करते हों। अक्सर प्रभु इन पुरुषों को प्रशिक्षित और तैयार कर रहा होता है, ताकि अन्त में उन्हें एक अलग मण्डली के रखवाले-उपदेशक के रूप में रखवाली करने और शिक्षा देने के लिए भेजा जा सके।

नये नियम के शब्द-केन्द्रित पद चरण

6: सही सेवकाई

पद	पद	पद	पद
प्रेरित	समाप्त हो गया है	वैश्विक कलीसिया	सुसमाचार की घोषणा और कलीसियाओं की स्थापना के लिए
भविष्यद्वक्ता	समाप्त हो गया है	स्थानीय कलीसिया (मुख्य रूप से)	स्थानीय कलीसिया के निर्माण के लिए
सुसमाचार सुनाने वाले	जारी है	वैश्विक कलीसिया	सुसमाचार की घोषणा और कलीसियाओं की स्थापना के लिए
रखवाले-उपदेशक	जारी है	स्थानीय कलीसिया	स्थानीय कलीसिया के निर्माण के लिए

अपनी बुलाहट के अनुसार काम करने वाले सही अगुवों के साथ, कलीसिया के भीतर के लोग अपने -अपने वरदानों और सेवकाइयों के साथ सही तरीके से सेवा कर सकते हैं। पौलुस कहता है कि अगुवे पवित्र लोगों को इसलिए तैयार करते हैं, ताकि "सेवा का काम किया जाए" (इफि. 4:12)। *डायकोनिया* शब्द सेवकाई के लिए है, जिसका मूल हमें सेवक शब्द देता है। पौलुस का मानना है कि हर किसी को कलीसिया की सेवकाई में सेवा करनी चाहिए। और सेवकाई एक "निर्माण परियोजना", अर्थात् मसीह की देह का "निर्माण करना" है (इफि. 4:12)। आधुनिक सोच में, सेवकाई अक्सर रखवालों और प्रचारकों के लिए होती है। परन्तु पौलुस ऐसा नहीं कहता! पवित्र लोगों को उनकी सेवकाइयों के लिए तैयार करने के लिए रखवाले -उपदेशक और सुसमाचार सुनाने वाले होते हैं।

मैंने एक बार जॉन मैकआर्थर को यह कहते हुए सुना था कि *मूडी मासिक (Moody Monthly)* ने सन् 1970 के दशक में ग्रेस चर्च पर एक लेख चलाया था। उस लेख का शीर्षक था "आठ सौ सेवकों वाली कलीसिया।" उस लेख का सिद्धान्त यह था कि कलीसिया के लगभग हर एक वयस्क सदस्य ने कलीसिया के जीवन में आधिकारिक क्षमता में होकर सेवा की। आत्मिक गतिशीलता ने उस कलीसिया को जकड़ लिया। देह ने ठीक से काम किया। इसके बाद जो हुआ, वह न केवल संख्यात्मक रूप से, बल्कि सबसे महत्वपूर्ण रूप से, आत्मिक परिपक्वता के संदर्भ में अविश्वसनीय उन्नति थी! जब हर कोई सेवा करता है, और देह के जीवन में अपने आत्मिक वरदानों का उपयोग करता है, तो देह मजबूत हो जाती है।

चरण 7: सही परिपक्वता

अब हम घूमकर उसी जगह पर आ गए हैं, जहाँ से हमने आरम्भ किया था। जब मसीह की देह इस तरह से काम

करती है, और उस देह में होकर हम काम करते हैं, तो हम आत्मिक रूप से तेजी से उन्नति करते हैं। हम उड़ान भरते हैं। हम उस “सिद्ध मनुष्य” पर पहुँच जाते हैं (इफि. 4:13)। हम “मसीह के पूरे डील-डौल तक” पहुँच जाते हैं (इफि. 4:13)। इस पड़ाव पर आप में एक आत्मिक गतिशील कार्य होता है, जो केवल मसीह की देह के भीतर ही हो सकता है। यह परिपक्वता कैसी दिखती है?

सबसे पहले, पौलुस विवेक की बात करता है। विवेक का अर्थ केवल गलती से सत्य को पहचानना नहीं, बल्कि आधे-अधूरे सत्यों में से सत्य को पहचानना है। इफिसियों 4:14 में पौलुस ने बताया कि हमारी परिपक्वता का एक परिणाम क्या होना चाहिए: “ताकि हम आगे को बालक न रहें जो मनुष्यों की ठग –विद्या और चतुराई से, उन के भ्रम की युक्तियों के और उपदेश के हर एक झोंके से उछाले और इधर –उधर घुमाए जाते हों।”

परिपक्व मसीही झूठी शिक्षाओं और “चतुराइयों” के सामने खड़े होते हैं, जिन्हें कलीसिया में फैलाना शैतान को अच्छा लगता है। वे ईश-वैज्ञानिक उदारवाद, सामाजिक न्याय आंदोलनों, जागरूक विचारधाराओं, सुसमाचार सुनाने वाले नारीवाद और कई जोखिमों से भरी शिक्षाओं का सामना क रते हैं, जिनका उपयोग शैतान कलीसिया को धोखा देने और तोड़ने के लिए करता है।

शिष्य बनाने वाला होना परिपक्वता का दूसरा चिन्ह है। परिपक्वता का अर्थ केवल सिखाया जाना नहीं, बल्कि यह है कि आप दूसरों को सिखाने में सक्षम हैं। आप कम परिपक्व मसीही लोगों को सही सिद्धान्त और बाइबल की बुद्धि प्रदान करते हैं। पौलुस इस शिक्षा पर एक महत्वपूर्ण योग्यता रखता है कि इसे प्रेम से किया जाना चाहिए। हम सभी ऐसे लोगों को जानते हैं, जो कलीसिया के सदस्य की तरह सिद्धान्त पर चर्चा नहीं करते, बल्कि कॉफी हाउस में बहस करने वाले व्यक्ति की तरह करते हैं। वे दूसरों का निर्माण करने के लिए सत्य के बारे में बात नहीं करते , बल्कि तर्क जीतने के लिए करते हैं। इस मानसिकता के विपरीत, पौलुस कहता है कि चेले बनाते समय हमारे पास सत्य और प्रेम दोनों होने चाहिए। वह कहता है: “वरन् प्रेम में सच् चाई से चलते हुए सब बातों में उसमें जो सिर है, अर्थात् मसीह में बढ़ते जाएँ” (इफि. 4:15)।

शिष्य बनाने का यह गुण हमारी अपनी उन्नति के लिए महत्वपूर्ण है। जब तक हम दूसरों से प्रेमपूर्वक सत्य नहीं बोल सकते, तब तक हम परिपक्व होने का दावा नहीं कर सकते।

तीसरी और अन्तिम बात, हमें लम्बे समय तक देह में सेवा करने के लिए अनुशासित होना है। पौलुस कहता है: “जिससे सारी देह, हर एक जोड़ की सहायता से एक साथ मिलकर और एक साथ गठकर, उस प्रभाव के अनुसार जो हर एक अंग के ठीक–ठीक कार्य करने के द्वारा उस में होता है, अपने आप को बढ़ाती है कि वह प्रेम में उन्नति करती जाए” (इफि. 4:16)।

इसमें मुख्य गुण एक ऐसा “अंग” होना है, जो “ठीक-ठीक कार्य” कर रहा है। हमें अपनी भूमिका को, अर्थात् जो भी कार्य प्रभु ने हमें करने के लिए दिया है, उसे पूरा करने में संतुष्ट होना चाहिए। और हमें इस भूमिका को लम्बे

समय तक पूरा करने का प्रयत्न करना चाहिए। मेरे दादाजी ने चालीस वर्षों से अधिक समय तक अपनी कलीसिया में एक टेलीविजन के द्वारा रविवार की पाठशाला की कक्षा को पढ़ाया। वह हर सप्ताह अपना पाठ तैयार करने और कक्षा को पढ़ाने के लिए उपस्थित होने के प्रति विश्वासयोग्य थे। उन्होंने कक्षा के उन सदस्यों के साथ भी सम्पर्क किया, जो हर सप्ताह उपस्थित होने में सक्षम नहीं थे। मरने से कुछ महीने पहले जब उन्हें ल्यूकेमिया का पता चला, तब भी उन्होंने पढ़ाना जारी रखा। जब तक उन्हें अस्पताल की देखभाल में नहीं रखा गया और लगभग एक सप्ताह बाद उनकी मृत्यु नहीं हो गई, तब तक उन्होंने शिक्षा देना बन्द नहीं किया। उन्होंने सचमुच तब तक शिक्षा दी, जब तक वे शारीरिक रूप से ऐसा करने में असमर्थ नहीं हो गए। यही आत्मिक परिपक्वता का चिन्ह है। मैंने एक बार हमारी मण्डली से कहा, "जब तक आप कर सकते हैं, तब तक जितना हो सके उतने परिश्रम से सेवा करें, जब तक कि परमेश्वर न कहें कि आपका समय समाप्त हो चुका है!" जब हम इन तीन अनुशासनों का पालन कर रहे होते हैं, तो हम जानते हैं कि हम आत्मिक परिपक्वता पर पहुँच चुके हैं।

2
देह में शिष्यत्व

आत्मिक परिपक्वता के तीन चिन्ह

गुणवत्ता	परिभाषा
विवेक	परिपक्व चेला सत्य और अर्ध-सत्यों में अन्तर करने में सक्षम होता है।
शिष्य बनाने वाला	परिपक्व शिष्य दूसरों को प्रेम से शिक्षा देना और यीशु मसीह के अन्य शिष्य बनाना आरम्भ करता है।
सेवा करने के लिए अनुशासित	परिपक्व शिष्य कलीसिया के जीवन में अपने आत्मिक वरदानों का उपयोग तब तक करता है, जब तक कि प्रभु उनके आत्मिक वरदान का उपयोग करने के लिए द्वार बन्द नहीं कर देता।

अब जबकि कलीसिया में जीवन का सबसे महत्वपूर्ण पहलू स्पष्ट रूप से समझ लिया गया है, तो अब हम अधिक विशेष रूप से यह देखना आरम्भ कर सकते हैं कि कलीसिया में शिष्यत्व कैसा दिखना चाहिए। शिष्यत्व का सबसे बुनियादी सिद्धान्त यह है कि हम मसीह के शिष्य हैं। इस कारण, शिष्यत्व आत्मिक विकास की प्रक्रिया है, जो हमें और अधिक मसीह के समान बनाती है। और यह जिस तरह से होता है, वह मसीह को देखने से होता है। पौलुस 2 कुरिन्थियों 3:18 में कहता है:

"परन्तु जब हम सब के उघाड़े चेहरे से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रकट होता है, जिस प्रकार दर्पण में, तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, हम उसी तेजस्वी रूप में अंश अंश करके बदलते जाते हैं।"

यह सत्य बिलकुल आवश्यक है। अन्यथा अमेरिका में हमें दी जाने वाली बहुत सी गंदी आत्मिकता से हम धोखा खा जाएँगे। शिष्यत्व का अर्थ, मसीह जैसा बनना है, जो उसने किया वही करना, जैसा उसने सोचा वैसा सोचना। शिष्य (मैथेटस) शब्द का शाब्दिक अर्थ है, सीखने वाला। एक शिष्य अपने गुरु से सीखता है। इस कारण, शिष्यत्व तब होता है, जब हम मसीह से मिलते हैं, सामर्थ्य के लिए उस पर निर्भर होते हैं, और उसके चरित्र में ढलना आरम्भ करते हैं। जैसा कि हमने देखा है, यह वास्तव में केवल उसकी देह, अर्थात् कलीसिया के भीतर ही हो सकता है। परन्तु यह कैसे होता है? इसके अभ्यास क्या हैं?

जब आप मसीह के जीवन और फिर प्रेरितों की शिक्षा का अध्ययन करते हैं, तो इसमें पाँच अभ्यास मिलते हैं, जो हमें शिष्यों के रूप में आकार देते हैं और जिनमें हमें अपनी स्थानीय कलीसिया के भीतर भाग लेना चाहिए। वे हैं: पवित्रशास्त्र की शिक्षा; प्रार्थना; संगति; आराधना; और शिष्य बनाना। यदि आपको इसे याद रखने में सहायता करने के लिए एक अक्षरबद्ध कविता की आवश्यकता है, तो यह वाक्यांश याद रखें: उद्धार पाए हुए लोग योग्य व्यक्ति का अनुसरण करते हैं (पवित्रशास्त्र, प्रार्थना, संगति, आराधना, शिष्य बनाना)।

पवित्रशास्त्र

परमेश्वर का वचन सिखाना सर्वोपरि इसलिए है, क्योंकि इसी में मसीह को मुख्य रूप से देखा जाता है। जैसा कि हमने पहले देखा, हमें "प्रेम में सच्चाई से" बोलना है (इफि. 4:15)। शायद कलीसिया के जीवन में पवित्रशास्त्र को सिखाने के महत्व को उजागर करने वाली मुख्य आयत कुलुस्सियों में पाई जाती है। पौलुस ने कहा:

"जिसका प्रचार करके हम हर एक मनुष्य को चेतावनी देते हैं और सारे ज्ञान से हर एक मनुष्य को सिखाते हैं, कि हम हर एक व्यक्ति को मसीह में सिद्ध करके उपस्थित करें। इसी के लिए मैं उसकी उस शक्ति के अनुसार जो मुझ में सामर्थ्य के साथ प्रभाव डालती है, तन मन लगाकर परिश्रम भी करता हूँ।" (कुलु. 1:28-29)

जब मसीह और उसकी सच्चाई का विश्वासयोग्यता के साथ प्रचार किया जाता है, तो लोग सुसमाचार की सच्चाई का प्रदर्शन होते हुए देखते हैं। वे अपने स्वयं के पाप और अविश्वास को देखते हैं। वे मसीह की अपनी आवश्यकता को देखते हैं। उसके आने वाले राज्य की आशा में उनका निर्माण होता है। एक शब्द में कहें, तो वे रूपांतरित होते हैं। पौलुस ने कहा कि उसने इस उद्देश्य के लिए पवित्र आत्मा के द्वारा दिए गए सभी आत्मिक रस के साथ काम किया। मसीह का प्रचार करना, भाई-बहनों को चेतावनी देना, और "सारे ज्ञान से सिखाना", ताकि हर कोई मसीह में परिपक्व हो जाए। पौलुस जानता था कि जीवन में बदलाव तब आता है, जब लोग परमेश्वर के वचन में मसीह को देखते हैं। यही कारण है कि वह पासबानी पत्रियों में परमेश्वर के वचन की घोषणा पर ध्यान केन्द्रित करने के लिए इतना आग्रही था। उदाहरण के लिए इन अनिवार्यताओं पर ध्यान दें:

- "इन बातों की आज्ञा दे और सिखाता रह।" (1 तीमु. 4:11)
- "जब तक मैं न आऊँ, तब तक पढ़ने और उपदेश देने और सिखाने में लौलीन रह।" (1 तीमु. 4:13)
- "अपनी और अपने उपदेश की चौकसी रख। इन बातों पर स्थिर रह, क्योंकि यदि ऐसा करता रहेगा तो तू अपने और अपने सुनने वालों के लिए भी उद्धार का कारण होगा।" (1 तीमु. 4:16)
- "इन बातों की भी आज्ञा दिया कर ताकि वे निर्दोष रहें।" (1 तीमु. 5:7)
- "जो प्राचीन अच्छा प्रबन्ध करते हैं, विशेष करके वे जो वचन सुनाने और सिखाने में परिश्रम करते हैं, दो गुने आदर के योग्य समझे जाएँ।" (1 तीमु. 5:17)
- "जो खरी बातें तू ने मुझ से सुनी हैं उनको उस विश्‍वास और प्रेम के साथ, जो मसीह यीशु में है, अपना आदर्श बनाकर रख। और पवित्र आत्मा के द्वारा जो हम में बसा हुआ है, इस अच्छी धरोहर की रखवाली कर।" (2 तीमु. 1:13-14)

- "जो बातें तू ने बहुत से गवाहों के सामने मुझ से सुनी हैं, उन्हें विश् वासी मनुष्यों को सौंप दे; जो दूसरों को भी सिखाने के योग्य हों।" (2 तीमु. 2:2)
- "अपने आप को परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करने वाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो।" (2 तीमु. 2:15)
- "सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धार्मिकता की शिक्षा के लिए लाभदायक है, ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिए तत्पर हो जाए।" (2 तीमु. 3:16–17)
- "परमेश्वर और मसीह यीशु को गवाह करके, जो जीवतों और मरे हुओं का न्याय करेगा, और उसके प्रकट होने और राज्य की सुधि दिलाकर मैं तुझे आदेश देता हूँ कि तू वचन का प्रचार कर, समय और असमय तैयार रह, सब प्रकार की सहनशीलता और शिक्षा के साथ उलाहना दे और डाँट और समझा।" (2 तीमु. 4:1–2)
- "वह [प्राचीन] विश्वासयोग्य वचन पर जो धर्मोपदेश के अनुसार है, स्थिर रहे कि खरी शिक्षा से उपदेश दे सके और विरोधियों का मुँह भी बन्द कर सके।" (तीतुस 1:9)
- "पर तू ऐसी बातें कहा कर जो खरे उपदेश के योग्य हैं।" (तीतुस 2:1)
- "सब बातों में अपने आप को भले कामों का नमूना बना। तेरे उपदेश में सफाई, गम्भीरता, और ऐसी खराई पाई जाए कि कोई उसे बुरा न कह सके, जिससे विरोधी हम पर कोई दोष लगाने का अवसर न पाकर लज्जित हों।" (तीतुस 2:7, 8)

स्पष्ट रूप से, पास्टरों के लिए यह अनिवार्य है कि वे अपनी मण्डलियों में परमेश्वर का वचन फैलाएँ। पास्टरों को वचन के गहरे जल में उतरने के लिए बुलाया जाता है, कि वे अपनी मण्डलियों को उन स्थानों पर ले जाएँ, जहाँ वे पहले कभी नहीं गए हैं, अर्थात् स्वर्ग के द्वार तक। कलीसिया की हर गतिविधि में परमेश्वर का वचन प्रवाहित होना चाहिए। हर बैठक, सभा, कक्षा और अवसर पवित्रशास्त्र से गूँजना चाहिए। अत: यह केवल रखवाले-उपदेशक के लिए नहीं है, बल्कि हर व्यक्ति एक दूसरे से परमेश्वर का वचन बोलता है। ऐसा होने पर ही कलीसिया वास्तविक मसीह के जैसे शिष्य बनाना आरम्भ करेगी।

प्रार्थना

इस सब को प्रेरित करने वाला प्रार्थना का सामूहिक जीवन है। यह कोई संयोग नहीं है कि प्रेरितों के काम 6 अध्याय में, प्रेरितों ने कहा, "यह ठीक नहीं कि हम परमेश् वर का वचन छोड़कर खिलाने–पिलाने की सेवा में रहें... परन्तु हम तो प्रार्थना में और वचन की सेवा में लगे रहेंगे" (प्रेरि. 6:2, 4)। प्रार्थना हमेशा वचन की सेवकाई के साथ होनी चाहिए। यह कलीसिया की सेवकाई के लिए विमान का ईंधन है।

जब वेल्स के एबरावन में मार्टिन लॉयड-जोन्स की कलीसिया में एक छोटी सी बेदारी आई, तो उसका श्रेय लॉयड-जोन्स ने कलीसिया की प्रार्थना सभाओं को दिया। बैठकें आयोजित की गईं और पास्टर के द्वारा आरम्भ की गईं, परन्तु फिर वे कलीसिया के हर उस सदस्य के लिए खुली थीं, जो प्रा र्थना करना चाहते थे। वे प्रार्थनाएँ परमेश्वर के राज्य और वचन की उन्नति पर केन्द्रित थीं। उन्होंने हृदय परिवर्तन और परमेश्वर के वचन को अपने जीवनों में फल लाने के लिए निवेदन किया। इसका फल यह हुआ कि परमेश्वर पवित्र आत्मा उन प्रार्थना सभाओं में आगे बढ़ने

लगा। तब नियमित सभाओं में और भी अधिक सामर्थ्य होने का एहसास हुआ। इसी तरह, सन् 1857 का न्यूयॉर्क की बेदारी तब आरम्भ हुई, जब न्यूयॉर्क में कुछ व्यवसायी बस प्रार्थना करने लगे और परमेश्वर से अमेरिका में आगे बढ़ने के लिए उत्साहपूर्वक विनती करने लगे। उनकी प्रार्थनाओं के उत्तर में, परमेश्वर ने अमेरिकी धरती पर अब तक हुए सबसे शक्तिशाली बेदारियों में से एक को जन्म दिया।

प्रार्थना परमेश्वर के सामने दीनता को व्यक्त करती है। यह इस बात का अंगीकार है कि हम अपने आप में इतने अच्छे नहीं हैं कि हम उस सेवकाई को पूरा कर सकें। सेवकाई में कुछ भी पूरा करने के लिए हमें पवित्र आत्मा की अलौकिक सामर्थ्य की आवश्यकता है (1 कुरि. 3:6)। यह पर मेश्वर के साथ बातचीत करना भी है। जब कोई कलीसिया प्रार्थना में अत्यधिक समय बिताती है, तो यह दर्शाता है कि वे वास्तव में एक परमेश्वर-केन्द्रित कलीसिया है।

संगति

एंथनी एक व्यक्ति था, जो आरम्भिक कलीसिया के काल में मिस्र में रहता था और जो परमेश्वर के साथ एक गहरी बातचीत करना चाहता था। उसे लगा कि यह संसार उसके जीवन में बहुत अधिक प्रभाव डालता है। अत: जिसे उसने मसीही विश्वास का एक उच्च रूप सोचा था, उसका अभ्यास करने के लिए, उसने अपने सामान का और अपने नियमित मसीही अनुभव को त्याग दिया और रेगिस्तान में एक आत्मिक संन्यासी का जीवन जीने चला गया। वह केवल रोटी और पानी पर जीवित रहता था और लगभग पूरी तरह से अन्य लोगों से अलग रहता था। वह उन लोगों का अगुवा बन गया, जिन्हें बाद में रेगिस्तान के धर्माचार्य कहा जाने लगा। जब आप इसकी तुलना मसीह के जीवन और उन उपदेशों से करते हैं, जिन्हें हमने पौलुस के द्वारा इफिसियों को पहले दिए गए उपदेशों से देखा, तो हम स्पष्ट रूप से देखते हैं कि यह बाइबल के निर्देशों के अनुरूप नहीं है। इस कारण से जॉन विक्लिफ , जॉन हुस और फिर मार्टिन लूथर और सुधारकों के लिए मठवाद का त्याग करना सही था। मसीही जीवन को देह की "संगति" *(कोइनोनिया)* में जीवन बिताना अवश्य है।

पौलुस ने रोमियों से कहा, "क्योंकि मैं तुम से मिलने की लालसा करता हूँ कि मैं तुम्हें कोई आत्मिक वरदान दूँ जिससे तुम स्थिर हो जाओ; अर्थात् यह कि जब मैं तुम्हारे बीच में होऊँ, तो हम उस विश्‍वास के द्वारा जो मुझ में और तुम में है, एक दूसरे से प्रोत्साहन पाएँ" (रोमि. 1:11 -12)। पौलुस जानता था कि उसे भी, जो कि सबसे बड़ा प्रेरित था, इन विश्वासियों के प्रोत्साहन की आवश्यकता थी। यह तब हुआ, जब मसीह की देह हमें पोषण प्रदान करते हुए सेवा करना आरम्भ करती है।

संगति के बारे में हमें जो एक और तत्व बताना चाहिए, वह यह है कि बाइबल आधारित संगति होने के लिए, इसे सत्य पर आधारित होना चाहिए। प्रेरितों के काम 2:42 में लूका ने लिखा है कि "वे प्रेरितों की शिक्षा पाने, और संगति रखने में... लौलीन रहे..." यह वही सिद्धान्त है, जो सच्ची संगति का रचना करता है। संगति का अर्थ केवल ऐसे लोग नहीं हैं, जो समान रुचियाँ साझा करते हैं, बल्कि यह सत्य में एक हुए लोग हैं, जो विभिन्न पृष्ठभूमियों से आते हैं, जो परस्पर एक दूसरे को प्रोत्साहित करते हैं।

आराधना

यीशु ने कुएँ पर खड़ी स्त्री से कहा कि "वह समय आता है, वरन् अब भी है, जिसमें सच्चे भक्त पिता की आराधना आत्मा और सच्चाई से करेंगे, क्योंकि पिता अपने लिए ऐसे ही आराधकों को ढूँढ़ता है। परमेश् वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसकी आराधना करनेवाले आत्मा और सच्चाई से आराधना करें।" (यूह. 4:23, 24)।

यीशु ने "आराधना" के लिए *प्रोस्कुनियो* शब्द का उपयोग किया है। इसका शाब्दिक अर्थ अपने मुँह के बल गिरने से है, जो एक अभिव्यक्ति है जो परमेश्वर के सामने पूरे मन से झुकने की ओर संकेत करती है। यीशु कह रहा है कि हमें परमेश्वर की आराधना करते समय उसका आदर करना है। इसे आत्मा से किया जाना है, जिसका अर्थ हमारे मन से है। इसे केवल बाहरी नहीं होना है, बल्कि यह हमारे अस्तित्व की गहराई से बहना चाहिए। यीशु ने कहा, "अपने सारे मन से, और अपने सारे प्राण से, और अपनी सारी बुद्धि से, और अपनी सारी शक्ति से प्रेम रखना" (मर. 12:30)। इस आराधना को सच्चाई से भी किया जाना है। हमें परमेश्वर की आराधना वैसे ही करनी है, जैसा वह वास्तव में है, न कि जैसा हम चाहते हैं कि वह हो।

इसके अतिरिक्त, आराधना परमेश्वर के वचन पर केन्द्रित होनी चाहिए। नये नियम में पाँच तत्व सूचीबद्ध किए गए हैं, जो वचन-केन्द्रित आराधना का निर्माण करते हैं। वे हैं:

- परमेश्वर का वचन पढ़ना (1 तीमु. 4:13)
- परमेश्वर के वचन से प्रार्थना करना (प्रेरि. 2:42)
- परमेश्वर के वचन को गाना (इफि. 5:19)
- परमेश्वर के वचन का प्रचार करना (2 तीमु. 4:2)
- *परमेश्वर के वचन को देखना (बपतिस्मा और प्रभु भोज के विधान) (1 कुरि. 11:17 –34)

*परमेश्वर के वचन में आत्मिक जवाबदेही और सच्ची संगति के कारण, विधानों का पालन केवल कलीसिया के जीवन में ही किया जाना चाहिए। उन्हें छोटे समूहों में या कलीसिया -सहायक सेवकाइयों के द्वारा नहीं लिया जाना चाहिए, क्योंकि इनमें से कोई भी कलीसिया का गठन नहीं करता है।

शिष्य बनाना

मैंने एक बार पास्टर टॉमी नेल्सन को यह कहते हुए सुना, "हमें खच्चर नहीं, बल्कि घोड़े बनना है!" यदि आप लम्बे समय से किसी खेत में रहे हैं, तो यह समरूपता जल्दी ही आपके मस्तिष्क में आ जाएगी। खच्चर कड़ा परिश्रम करते हैं, परन्तु वे कभी प्रजनन नहीं करते। दूसरी ओर, घोड़े सन्तान उत्पन्न करते हैं! यह देह में हम में से प्रत्येक के लिए परमेश्वर की योजना है (मत्ती 28:18-20)। द नेविगेटर्स के संस्थापक डॉसन ट्रॉटमैन लोगों से पूछते थे, "आपके आत्मिक बच्चे कौन हैं? क्या आपने अपनी नकल को बनाया है?" यह एक शानदार और अक्सर दोषी ठहराने वाला प्रश्न है। फिर भी यह वही अनिवार्यता है, जो प्रभु हम में से प्रत्येक को देता है। यह वही अनिवार्यता है जो पौलुस ने तीमुथियुस को दी थी:

और जो बातें तू ने बहुत गवाहों के साम्हने मुझ से सुनी हैं, उन्हें विश्वासी मनुष्यों को सौंप दे; जो औरों को भी सिखाने के योग्य हों। (2 तीमु. 2:2)

मसीह का अनुसरण करने के बारे में हमने जो सीखा है, वह हमें शिष्यों की दूसरी पीढ़ी को सौंपना है। हमें स्वयं की नकल बनाना है। हमें खच्चर नहीं, घोड़े बनना है। लोगों को मसीह की ओर आकर्षित करने और फिर उन्हें "मसीह की आज्ञाओं का पालन करना सिखाने" की इस इच्छा से हमा रे हृदयों में आग लग जानी चाहिए। पौलुस ने इसे इस तरह व्यक्त किया: "मैं सब मनुष्यों के लिए सब कुछ बना कि किसी न किसी रीति से कई एक का उद्धार कराऊँ" (1 कुरि. 9:22)। विलियम चाल्मर्स बर्न्स ने स्कॉटलैंड में किल्सिथ के पास्टर के रूप में रॉबर्ट मुरे मैकचेन का अनुसरण किया। सन् 1839 में स्कॉटलैंड में एक बेदारी का नेतृत्व करने के लिए परमेश्वर ने बर्न्स का उपयोग किया। फिर भी वह और अधिक शिष्य बनाने के लिए तरस रहे थे। उन्होंने कहा:

"मैं परमेश्वर के लिए जलने के लिए तैयार हूँ। मैं किसी भी तरह की कठिनाई को सहने के लिए तैयार हूँ, यदि किसी तरह से मैं कुछ लोगों का उद्धार कर सकूँ। मेरे हृदय की इच्छा उन लोगों पर मेरे महिमामय उद्धारकर्ता को उजागर करना है, जिन्होंने उसके बारे में कभी नहीं सुना है।"

अन्त में वह एक मिशनरी के रूप में सेवा करने के लिए चीन चले गए। और वह हडसन टेलर के आत्मिक पिता बन गए, जो वही व्यक्ति है, जिसने चीन में मिशनरी उद्यम का बीड़ा उठाया था। बर्न्स की तरह, हमारे मनों को सुसमाचार प्रचार और परमेश्वर के वचन की शिक्षा के माध्यम से शिष्य बनाने के लिए ज्वलन्त होना चाहिए।

छोटे समूह का शिष्यत्व

हमें अपने सम्पूर्ण कलीसियाई जीवन में पवित्रशास्त्र, प्रार्थना, संगति, आराधना और शिष्य बनाने में लगे रहना चाहिए। परन्तु कभी-कभी इन तत्वों को (अर्थात् पवित्रशास्त्र, प्रार्थना, संगति, आराधना और शिष्य बनाने को) बड़ी कलीसिया की प्रथाओं को बनाए रखते हुए एक छोटे समूह में अमल में लाना सहायक होता है। विकास और परिपक्वता के विभिन्न चरणों में विश्वासियों के लिए विभिन्न प्रकार के शिष्यत्व कार्यक्रमों की सुविधा प्रदान करना कलीसियाओं के लिए सहायक होता है। यह आपकी स्थानीय कलीसिया के लोगों के साथ कलीसियाई जीवन के भाग के रूप में किया जाना चाहिए। जो शिष्यत्व समूह स्थानीय कलीसिया में आधारित नहीं हैं, वे उस "देह के सिद्धान्त" को खो देते हैं, जिसे हमने पहले रेखांकित किया था। देह की गतिशीलता और ऊपर बताए गए शिष्यत्व के सामूहिक पहलू के बिना, एक छोटा शिष्यत्व समूह हमेशा छाया में ही बना रहेगा। यह आपको कभी भी गहराई में नहीं ले जा सकता, क्योंकि यह देह के बाहर है।

इस कारण, मैं केवल उन लोगों को शिष्य बनाता हूँ, जो मेरी स्थानीय कलीसिया की देह में शामिल हैं और कलीसिया के सामूहिक जीवन में सक्रिय रूप से शामिल हैं। फिर भी, एक-एक करके या छोटे समूह में शिष्यत्व कलीसियाई जीवन में बढ़िया परिणाम देता है। इसमें मुख्य बात एक समय सीमा (तीन सप्ताह, तीन महीने, एक वर्ष, आदि) निर्धारित करना और फिर यह रेखांकित करना है कि शिष्यत्व समूह में शामिल लोगों को कैसे प्रशिक्षित किया जाएगा। कौन से वचन का अध्ययन किया जाएगा और समूह में शामिल लोगों को शिष्य बनाने के लिए कैसे प्रशिक्षित किया

जाएगा? इस प्रकार की शिक्षा और प्रशिक्षण प्रत्येक कलीसिया में शिष्य बनाने की प्रक्रिया का एक अमूल्य भाग बन जाता है। हमें हमेशा यह पूछना चाहिए कि हम लोगों को उनकी आत्मिक परिपक्वता में और कैसे आगे बढ़ा सकते हैं, और अक्सर शिष्यत्व समूह ऐसा करने का एक उत्कृष्ट तरीका होता है। मुझे यह भी जोड़ना अवश्य है कि यह संस्कृति जैविक शिष्यत्व का निर्माण करती है। जैविक शिष्यत्व तब होता है, जब लोग इन सिद्धान्तों को स्वचालित पद्धति पर उपयोग करना आरम्भ करते हैं। वे सुसमाचार प्रचार करते हैं और दूसरों को सिखाते हैं और बाइबल अध्ययनों का निर्माण करते हैं और औपचारिक शिष्यत्व कार्यक्रम के बिना बन्दीगृह में जाते हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो उन्हें कलीसिया के द्वारा इसे आधिकारिक रूप से आयोजित किए जाने की आवश्यकता नहीं है। इसके बजाय, वे कलीसिया के भीतर स्वयं-आरम्भ करने वाले हैं। सामूहिक शिष्यत्व पर ध्यान केन्द्रित करके और फिर छोटे-समूह वाले शिष्यत्व में शामिल होकर, शिष्य बनाना कलीसिया की संस्कृति का गुणसूत्र बन जाता है।

परिशिष्ट: किस प्रकार की कलीसिया?

एक पास्टर के रूप में मुझ से अक्सर पूछे जाने वाले बढ़िया प्रश्नों में से एक यह है, "मैं एक बाइबल आधारित कलीसिया कैसे ढूँढ़ सकता हूँ?" यह सच है कि जिस तरह से हमने रेखांकित किया है, ठीक उसी तरह से कलीसियाई जीवन में शामिल होने के लिए, आपको सही कलीसिया में शामिल होने के लिए सावधान रहना चाहिए। मैं एक दुर्बल, मरती हुई या मरी हुई कलीसिया में वर्षों तक रहने के बजाय, एक अच्छी, स्थिर कलीसिया में जाने के लिए एक घण्टे, बीस मिनट तक गाड़ी चलाना पसंद करूँगा। इस क्षेत्रीय मार्गदर्शिका के समान आप में विश्वास वाली कलीसिया को खोजने की इच्छा होनी चाहिए। हमारी कलीसिया, अर्थात् रैले, उत्तरी कैरोलिना में कैपिटल कम्युनिटी कलीसिया के लिए, मैंने ऐसे बारह स्तम्भों को रेखांकित किया है, जो यह परिभाषित करते हैं कि हम कौन हैं। मैं विनम्रतापूर्वक उन्हें आपके सामने महत्वपूर्ण गुणों के उदाहरण के रूप में रखता हूँ, जिनके बारे में आपको इसलिए विचार करना चाहिए, क्योंकि आप एक ऐसी बाइबल आधारित कलीसिया ढूँढ़ रहे हैं, जिसमें आपको अपना जीवन निवेश करना है। ये हैं:

1. परमेश्वर-केन्द्रित – हमारी इच्छा और मुख्य ध्यान यह है कि हमारी कलीसिया में, हमारे परिवारों में और प्रत्येक विश्वासी के जीवन में परमेश्वर को आदर मिले और उसकी महिमा की जाए। हम परमेश्वर के सामने "कोरम देओ" जीवन बिताना चाहते हैं।

2. प्राचीनों की बहुलता – कलीसिया के प्रशासन के लिए परमेश्वर की योजना यह है कि प्रत्येक स्थानीय कलीसिया का नेतृत्व और रखवाली ऐसे धर्मी पुरुषों की बहुलता के द्वारा की जानी चाहिए, जो प्राचीन के पद पर सेवा करते हैं।

3. खरी शिक्षा – खरी शिक्षा मसीह की सच्ची कलीसिया के गुरुत्वाकर्षण के केन्द्र के रूप में कार्य करती है। इसका आरम्भ सुसमाचार से होता है, परन्तु इसमें परमेश्वर के सारे अभिप्राय को सिखाना भी शामिल है।

4. बाइबल आधारित आराधना – हम परमेश्वर की आराधना "आत्मा और सच्चाई से" करना चाहते हैं, जैसा उसके वचन में बताया गया है।

5. आत्मा से भरी संगति – हमारी आत्मा से भरी संगति पवित्र आत्मा के फिर से जीवित करने वाले कार्य का साझा आत्मिक अनुभव है और फिर उसी सुसमाचार पर विश्वास करना है। हम शान्ति के बन्धन में आत्मा की इस एकता को बनाए रखना चाहते हैं।

6. व्याख्यात्मक प्रचार – हम बाइबल पढ़ाने की अनुक्रमिक और व्याख्यात्मक पद्धति के लिए प्रतिबद्ध हैं जिसमें हम हमारे उद्धार के बारे में सैद्धांतिक सत्यों को परमेश्वर, स्वयं और मसीह में होकर समझते हैं और उन्हें अपने दैनिक जीवन में लागू करते हैं।

7. पवित्रता की आवश्यकता – मसीह अपनी कलीसिया के प्रत्येक विश्वासी को उद्धार के लिए परमेश्वर के प्रति कृतज्ञता के हृदय से व्यक्तिगत् पवित्रता का जीवन व्यतीत करने के लिए बुलाता है। यदि मसीह की कलीसिया को पवित्र होना है, तो यह उसके सदस्यों के जीवन में दिखाई देना चाहिए।

8. परमेश्वर के द्वारा बनाए गए परिवार – स्थिर, बाइबल आधारित परिवार कलीसिया और संस्कृति दोनों की नींव हैं। अत: हम मसीही पतियों, पत्नियों और बच्चों को स्थिर मसीही परिवारों की स्थापना में प्रभु का आदर करने के लिए तैयार करते हैं।

9. बिचवई की प्रार्थना – हम कलीसिया के राज्य के सभी कार्यों की उन्नति के लिए बिचवई की प्रार्थना में पूरी तरह से परमेश्वर की आत्मा पर निर्भर हैं।

10. सुसमाचार और मिशनरी उत्साह – हर विश्वासी को हमारे समुदायों और जातियों के बीच सुसमाचार की उन्नति में उत्साही और सक्रिय रूप से शामिल होना चाहिए।

11. शिष्यत्व का प्रशिक्षण – हर मसीही शिष्य को कुछ सिद्धान्तों को जानना चाहिए और सेवकाई में कुछ काम करने के लिए तैयार होना चाहिए। हमारी इच्छा है कि हम सभी को प्रशिक्षित करें और "हर एक व्यक्ति को मसीह में सिद्ध करके उपस्थित करें"।

12. द सेम्पर रिफॉर्मंडा सिद्धान्त – यह वाक्यांश, जिसका अर्थ है "हमेशा सुधार करना", हमारी कलीसिया की परिभाषा है। इसका अर्थ है कि हमें हमेशा एक कलीसिया के रूप में परमेश्वर के वचन के अनुरूप होने का प्रयत्न करना चाहिए। हमें हमेशा परमेश्वर के राज्य की उन्नति में आगे बढ़ते रहना चाहिए और अपनी सेवकाई की पिछली सफलताओं पर टिके नहीं रहना चाहिए।

THE MENTORING PROJECT

ग्रांट कैसलबेरी उत्तरी कैरोलिना के रैले में कैपिटल कम्युनिटी कलीसिया के वरिष्ठ पास्टर हैं। वह अनशैम्ड ट्रुथ मिनिस्ट्रीज़ (Unashamed Truth Ministries) (unashamedtruth.org) के अध्यक्ष भी हैं, यह एक ऐसी सेवकाई है, जो लोगों को परमेश्वर -केन्द्रित मसीही विश्वासी से परिचित कराती है।